संवाद सेतु

मीडिया का आत्मावलोकन

अंक 28 पृष्ठ 20 जनवरी, 2023 नई दिल्ली

संचारीय इकोसिस्टम का अंदरूनी यथार्थ ट्विटर फाइल्स

www.samvadsetu.com

संपादकीय

संपादक

आशुतोष भटनागर

कार्यकारी-संपादक

डॉ. जयप्रकाश सिंह

उप-संपादक

डॉ. रविंद्र सिंह भड़वाल

डिजाइनिंग

तिलक राज

ई-मेल :

samvadsetu2011@gmail.com

फेसबुक पेज

@samvadsetu2011

अनुरोध

संवादसेतु की इस पहल पर आपकी टिप्पणी एवं सुझावों का स्वागत है। अपनी टिप्पणी एवं सुझाव कृपया उपरोक्त ई-मेल पर अवश्य भेजें।

'संवादसेतु' मीडिया सरोकारों से जुड़े पत्रकारों की रचनात्मक पहल है। 'संवादसेतु' अपने लेखकों तथा विषय की स्पष्टता के लिए इंटरनेट से ली गई सामग्री के रचनाकारों का भी आभार व्यक्त करता है। इसमें सभी पद अवैतनिक हैं।

अनुक्रम

घर की बात

समानता और मानवता के सोशल छद्म में मस्क का 'पिन'

(पृष्ठ 4-5-6-7)

आवरण कथा

संचारीय इकोसिस्टम का अंदरूनी यथार्थ 'ट्विटर फाइल्स '

(पृष्ठ 8-9-10)

विमर्श

भारतीय कला का लोकमन

(पृष्ठ 11-12-13)

विज्ञापनों की दुनिया

अमूल का अनूठा अभियान

(पृष्ठ 14-15)

टर्म

फर्जी सूचनाओं पर नकेल कसेगी 'वर्चुअल जेल'

(पृष्ठ 16)

फिल्म समीक्षा

'बिम्बिसार' : सिनेमाई सर्जनात्मकता को नई ऊंचाई

(पृष्ठ 17)

मीडिया का अर्थतंत्र

'विक्टिम कार्ड' की पूर्वाग्रही पत्रकारिता

(पृष्ठ 18)

मीडिया हलचल

इन्फ्लुएंसर्स पर 50 लाख रुपये तक के जुर्माने की तैयारी

(पृष्ठ 19-20)

पिछले दिनों ट्विटर के अधिग्रहण और ट्विटर फाइल्स के माध्यम से सामने आए नए तथ्यों ने संचारीय-संसार को आत्मावलोकन के लिए विवश कर दिया। सूचना और वाक् की स्वतंत्रता को लेकर किए जाने वाले दावे और संचारीय निर्णय प्रक्रिया की इस सिद्धांत से दूरी ट्विटर फाइल्स के माध्यम से जगजाहिर हुई, इसलिए एक स्तब्धता देखने को मिली और फिर चुप्पी ओढ़ ली गई। चयनित चुप्पी कैसे ओढ़ी जाती है, उसकी आदर्श केस स्टडी ट्विटर फाइल्स है...

संवादसेतु मीडिया का आत्मावलोकन है। यह भी स्थापित तथ्य है कि आत्मावलोकन करना, अपने गुण-दोषों को पहचानना और स्वीकार करना सबसे कठिन कार्य है। शायद इसी कारण, आत्मावलोकन की आवश्यकता होते हुए भी सदैव इस प्रक्रिया के साथ चलना संभव नहीं होता। कुछ अवसर आते हैं, कुछ अवरोध खड़े होते हैं, सोचने के दैनिक तरीके में व्यवधान पैदा होता है अथवा एकदम से नए तथ्य सार्वजनिक होते हैं तो आत्मावलोकन बाध्यता बन जाता है। तब इसके बिना आगे बढ़ना संभव नहीं होता।

पिछले दिनों ट्विटर के अधिग्रहण और ट्विटर फाइल्स के माध्यम से सामने आए नए तथ्यों ने संचारीय-संसार को आत्मावलोकन के लिए विवश कर दिया। सूचना और वाक् की स्वतंत्रता को लेकर किए जाने वाले दावे और संचारीय निर्णय प्रक्रिया की इस सिद्धांत से दूरी ट्विटर फाइल्स के माध्यम से जगजाहिर हुई, इसलिए एक स्तब्धता देखने को मिली और फिर चुप्पी ओढ़ ली गई। चयनित चुप्पी कैसे ओढ़ी जाती है, उसकी आदर्श केस स्टडी ट्विटर फाइल्स है। ट्विटर के अधिग्रहण को लेकर जिस तरह से हाय-तौबा मची और यह साबित करने की कोशिश की गई कि एक संचारीय दुर्घटना घट गई है, उससे ऐसा ही संदेश गया कि इस घटनाक्रम का आकलन पूर्वाग्रहपूर्ण तरीके से किया जा रहा है।

संचारीय दुनिया में चुप्पी का एक कारण यह भी हो सकता है कि ट्विटर फाइल्स उस संचारीय पारिस्थितिकी को बुरी तरह प्रभावित कर रही है, जिसके लाभार्थी वाक् और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर दूसरों को कठघरे में खड़ा करते रहे हैं। ट्विटर फाइल्स के जरिए जिस तरह की सूचनाएं सामने आ रही हैं, उनका महत्त्व विकीलीक्स से कम नहीं है। फिर भी, उस पर विस्तार से चर्चा नहीं हो रही है। हिन्दी संचार माध्यमों में तो यह चर्चा सिरे से गायब है। ट्विटर की आर्थिकी को प्रभावित करने के लिए मीडिया-मंचों से आह्वान हो रहा है, इसीलिए संवादसेतु ने इस बार ट्विटर फाइल्स को आत्मावलोकन का अवसर माना है। इस अंक में ट्विटर से संबंधी घटनाक्रम को लेखकों-विशेषज्ञों ने अपने ढंग से समझने की कोशिश की है, इसलिए यदि कहीं विरोधाभास दिखता है तो इसे स्वाभाविक ही माना जाएगा।

'विमर्श' कला संबंधी संचार के एक पड़ाव को पार कर दूसरे विषय में प्रवेश कर रहा है। अभी तक कला-संचार का उपयोग विभिन्न सभ्यताएं अपने प्रभाव को बढ़ाने के लिए करती रही हैं। भारत अपने समृद्ध कला-चिंतन और कला-परम्पराओं के बावजूद कलाओं का सभ्यतागत उपयोग नहीं कर पा रहा है तो इसका एक कारण यह कि वह इस क्षेत्र में अपने मूलाधारों को विस्मृत कर चुका है। विमर्श स्तंभ कला के सैद्धांतिक आधारों से फिर परिचय करा रहा हैए यही इस स्तंभ की सार्थकता है। इस बार यह विमर्श भारतीय जनमानस में रची-बसी लोककलाओं के महत्त्व को रेखांकित करता है।

अधिग्रहण के बाद ट्विटर अधिक प्रामाणिक होने की कोशिश कर रहा है। इसी कड़ी में ट्विटर में वर्चुअल जेल का फीचर जोड़े जाने का प्रस्ताव है। यह अवांछित और अप्रामाणिक ट्वीट्स को रोकने में कितना सफल होगा यह देखने वाली बात होगी। विज्ञापन की दुनिया में अमूल के विज्ञापन अभियान ने अपना अमिट प्रभाव छोड़ा है। इस अंक में अमूल के विज्ञापन अभियान के सर्जनात्मक विशेषताओं को पहचानने की कोशिश की गई है। आशा है कि यह नया अंक आपको संचारीय दुनिया के यथार्थ के एक बड़े यथार्थ से परिचित कराने में सक्षम होगा।

शुभकामनाओं सहित!

आशुतोष भटनागरह्य

समानता और मानवता के सोशल छद्म में मस्क का 'पिन'

❐ उमेश चतुर्वेदी

व्यावहारिकता के धरातल पर मार्क्सवाद और पूंजीवाद एक-दूसरे के विरोधी छोर पर नजर आते हैं। यह विरोध ऐसा है कि वैचारिकी के प्राथमिक विद्यार्थी को लगता है कि दोनों में साम्य के लिए कोई बिंदु नहीं हो सकता। आम तौर पर अमेरिका और पश्चिमी यूरोपीय समाज और व्यवस्था को पूंजीवादी ही माना जाता है। वहां की आर्थिकी पूंजीवाद का ही आभास देती है। लेकिन पूंजीवाद को लेकर बनी इस अवधारणा की पोल तब खुलती है, जब पता चलता है कि पूंजीवादी व्यवस्था के उपभोगवादी दर्शन के पीछे की वैचारिकी मार्क्सवाद के सिरे पर जाकर जुड़ी है। सामान्य समझ के हिसाब से इसे वैचारिकी का विचलन माना जाना चाहिए, लेकिन यह दरअसल चालाकी है। सोच के आधार पर वामपंथी होना और इसके जरिए कथित पूंजीवादी व्यवस्था एवं सांप्रदायिकता का विरोध करना इस चालाकी का ही विस्तार है। इसे आप ट्विटर, फेसबुक जैसे सोशल मीडिया के एल्गोरिदम के जरिए समझ सकते हैं। लेकिन विरोधाभासी व्यवस्था के शांत तालाब में एलन मस्क ने जोरदार पत्थर उछाल फेंका है। इससे उठने वाली लहरों में पूंजीवादी आधार पर खड़ी वामपंथी वैचारिकता की इमारत डूबने लगी है।

फेसबुक हो या ट्विटर, ये सिर्फ आधुनिक तकनीक के उदाहरण भर नहीं हैं, बल्कि तकनीक के जरिए लोगों की सोच की बुनियाद पर भावनाओं का कारोबार करने का मंच भी हैं। मार्क्सवादी वैचारिकी की नजर में पूंजीवादी व्यवस्था लोकतंत्र विरोधी है, वह बराबरी के सिद्धांत के भी खिलाफ है और सांप्रदायिक है। इसलिए पूंजीवादी व्यवस्था के तहत विकसित फेसबुक और ट्विटर ने वैचारिकी के एक छोर को अपने ऑर्टिफिशल इंटेलिजेंस के जरिए बाधित करना शुरू कर दिया और इसके जरिए भी अपना कारोबार बढ़ाकर अपनी पूंजी को बड़ा बनाया। यहां यह बात भी गौर करने की है कि वामपंथी वैचारिकी समानता और स्वतंत्रता के आधुनिक वैचारिकी की सबसे बड़ी पैरोकार बनती है। लेकिन ट्विटर हो या फिर फेसबुक, कथित राष्ट्रवादी या दक्षिणपंथी वैचारिकी को बाधित करते रहे हैं। इन अर्थों में ट्विटर

और फेसबुक एक तरह से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हनन ही करते रहे हैं। एलन मस्क के कब्जे में आने के पहले तक अमेरिकी पूंजीवादी व्यवस्था में पला-बढ़ा और कारोबार कर रहा ट्विटर वैचारिक स्तर पर इतना असहिष्णु बनता गया कि उसने राष्ट्रवादी वैचारिकी के विचारों को बाधित या सेंसर करना शुरू कर दिया। दिलचस्प यह है कि यह सब कथित समानता के सिद्धांत को पोषित करने के नाम पर किया गया।

टेस्ला के सीईओ और मालिक एलन मस्क हमेशा से ट्विटर के इस एल्गोरिदम और उसके जरिए सिर्फ वाम वैचारिकी को प्रोत्साहित करने के विरोधी रहे हैं...

जनवरी 2020 में अमेरिकी राष्ट्रपति पद के चुनाव में डोनाल्ड ट्रंप की हार के बाद उनके समर्थकों ने उसे स्वीकार करने से जब मना किया और ट्रंप ने चुनाव में धांधली का आरोप लगाया तो उनके ही ट्विटर अकाउंट को ब्लॉक कर दिया गया। भारत में भी भारतीय जनता पार्टी समर्थक ट्विटर अकाउंट की या तो रीच लगातार घटाई गई या फिर उन्हें सांप्रदायिक या भड़काऊ होने का आरोप लगाकर प्रतिबंधित किया गया। फेसबुक तो पिछले कई वर्षों से राष्ट्रवादी दर्शन वाले विचारों और उसे प्रस्तुत करने वाले हैंडल और आईडी की रीच लगातार घटा रहा है। वहीं, वाम वैचारिकी के लोग और उनके आईडी एवं हैंडल लगातार फल-फूल रहे हैं। फेसबुक या ट्विटर देखकर तो ऐसा लगता है कि मानो आम लोग राष्ट्रवादी या दक्षिणवादी दर्शन को नकार रहे हैं, जबकि वामपंथी वैचारिकी का भरपूर समर्थन हो रहा है। लेकिन जमीनी स्तर पर इस दर्शन की लोकप्रियता की पोल चुनाव-दर-चुनाव खुल रही है। अगर वाम वैचारिकी को सोशल मीडिया पर समर्थन बढ़ रहा है, तो इसका असर जमीन पर भी दिखना चाहिए और वोटों के रूप में वामपंथी दलों को भरपूर समर्थन मिलना चाहिए था। लेकिन ऐसा होता नजर नहीं आता।

टेस्ला के सीईओ और मालिक एलन मस्क हमेशा से ट्विटर के इस एल्गोरिदम और उसके जरिए सिर्फ वाम वैचारिकी को प्रोत्साहित करने के विरोधी रहे हैं। इसीलिए जब बीते साल 13 अप्रैल को ट्विटर को खरीदने का उन्होंने सौदा पक्का किया तो वामपंथी वैचारिकी के खेमों की

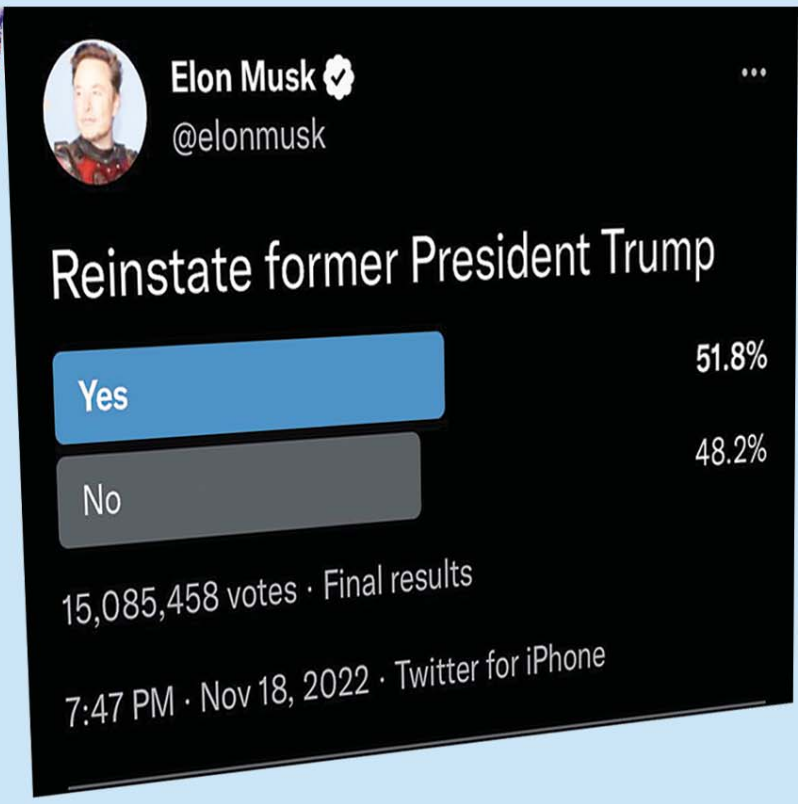

धड़कन बढ़ गई थी। फिर भी इस खेमे को उम्मीद थी कि ट्विटर के सीईओ पराग अग्रवाल और उनकी कानूनी एवं नीतिगत मामलों की प्रमुख विजया गड्डे की टीम यथास्थिति बनाए रखने में कामयाब होगी। लेकिन एलन मस्क ने पहले से ही ऐलान कर रखा था कि ट्विटर को वह समानता का मंच बनाएंगे और उन्होंने जब 28 अक्तूबर को सौदा पक्का करके अधिग्रहण किया तो पहला काम यह किया कि बराबरी की राह में बाधक करोड़ों की कमाई वाले वामपंथी पराग अग्रवाल, विजया गड्डे और कंपनी के मुख्य वित्त अधिकारी नेड सेगल को बाहर का रास्ता दिखा दिया।

भारत का महीनों तक चला किसान आंदोलन भी ट्विटर के एल्गोरिदम का ही उदाहरण है। नागरिकता संशोधन कानून को लेकर वामपंथी वैचारिकी ट्विटर और फेसबुक जैसे माध्यमों के जरिए लोगों को बरगलाने में कामयाब रही कि इस कानून के जरिए मुसलमानों की नागरिकता छीनी जाएगी...

इसके बाद से वाम वैचारिकी छटपटा रही है। क्योंकि उसके हाथ से आधुनिक तकनीक के जरिए विकसित वह प्रभावी मंच निकल गया, जिसके जरिए वह वैचारिक तौर पर ना सिर्फ अपना एजेंडा दुनिया पर थोपने में कामयाब रहता था, बल्कि इसके जरिए दक्षिणपंथी या राष्ट्रवादी वैचारिकी के साथ अपने विरोधियों को सवालों के घेरे में खड़ा कर देता था। यह ट्विटर के एल्गोरिदम का ही कमाल था कि भारत में ताहिर हुसैन जैसे लोगों ने दंगे किए, लेकिन सवाल कपिल मिश्रा पर उठा। शाहीन बाग महीनों तक बंद रहा, इससे हजारों लोगों की रोजी-रोटी प्रभावित हुई, लेकिन शाहीन बाग की महिलाएं ही बेचारा नजर आईं, जबकि उनके विरोध का आधार ही छद्म की बुनियाद पर टिका था। भारत का महीनों तक चला किसान आंदोलन भी ट्विटर के एल्गोरिदम का ही उदाहरण है। नागरिकता संशोधन कानून को लेकर वामपंथी वैचारिकी ट्विटर और फेसबुक जैसे माध्यमों के जरिए लोगों को बरगलाने में कामयाब रही कि इस कानून के जरिए मुसलमानों की नागरिकता छीनी जाएगी। इन सोशल मीडिया मंचों के एल्गोरिदम का ही कमाल था कि यह नैरेटिव स्थापित हुआ कि तीनों किसान कानून किसानों के विरोध में हैं। लेकिन वे किस तरह विरोध में हैं, इसका कोई जवाब न तो ट्विटर और ना ही फेसबुक की वामवैचारिकी और एल्गोरिदम के पास था। इसका पर्दाफाश करने की जब भी राष्ट्रवादी या दक्षिणपंथी वैचारिकी ने कोशिश की, इनके एल्गोरिदम ने इन विचारों की रीच घटा दी या ऐसे आईडी या हैंडल को ब्लॉक कर दिया। दोनों ही प्लेटफॉर्म पर

हैंडल या आईडी को ब्लू टिक के जरिए विशेष और प्रामाणिक बताने की व्यवस्था है। लेकिन दोनों ही मंचों का एल्गोरिदम ऐसा है कि राष्ट्रवादी दर्शन से प्रभावित लोगों को ब्लूटिक मिलना आसान नहीं, जबकि लाल झंडा उठाने वाला हर व्यक्ति ब्लू टिक का हकदार बनता रहा। इससे साफ है कि ट्विटर हो या फेसबुक, वे वामपंथ के झूठ के सहारे अपना रोजगार चला रहे थे। इस बहाने वे भारत के अंदरूनी मामलों में ना सिर्फ दखल दे रहे थे, बल्कि भ्रम के कुहासे में देश की व्यवस्था को बदहाल बना रहे थे।

ट्विटर ने ऐसा अमेरिका में भी किया। यूरोप में भी उसका रवैया ऐसा ही रहा। जब जर्मनी में पश्चिमी एशिया से आए लोगों ने दंगे किए, महिलाओं से बलात्कार किए, तो ऐसी महिलाओं की आपबीती ट्विटर के मंचों से या तो गायब रही या फिर उसे सीमित कर दिया गया। इसलिए कि ऐसी जानकारियों से कथित सेक्युलरवाद और मार्क्सवादी वैचारिकी की पोल खुलती है।

चूंकि एलन मस्क इस वैचारिकी के विरोधी हैं। वे मानते हैं कि इससे बराबरी की अवधारणा का खंडन होता है, इसलिए वे सेकुलरवादियों की आंख की किरकिरी हैं। मस्क ट्रंप के ट्विटर हैंडल को ब्लॉक किए जाने के भी विरोधी रहे और भारत की फिल्मी क्वीन कंगना रणौत के भी। इसलिए जैसे ही मस्क ने ट्विटर का अधिग्रहण किया तो ऐसे ब्लॉक किए गए हैंडल फिर से बहाल किए जाने लगे। इससे सेक्युलरवादियों को गहरा झटका लगा है। उनका स्थापित नैरेटिव बदलता हुआ नजर आने लगा है।

पश्चिमी समाज में एक और बड़ा विरोधाभास है। वह मैग्नाकार्टा की संधि के मुताबिक दम भरता है कि उसकी सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था में बराबरी और स्वतंत्रता की सोच को विशेष इज्जत है। लेकिन हकीकत में वह भी किसी खास वैचारिकी और सामंतवादी व्यवस्था की ही पोषक है। वहां की पत्रकारिता की दुनिया में मोटी पगार वाले वामपंथियों की अच्छी खासी भीड़ है और वे अपनी व्यवस्था और समाज के लिए अच्छे इन्फ्लुएंसर की हैसियत रखते हैं। मस्क ने ऐसे कई अमेरिकी पत्रकारों और इंटेलेक्चुअल के ट्विटर हैंडल से ब्लू टिक हटा लिया या फिर ब्लॉक कर दिया था। यह बात और है कि इसकी भी आलोचना हुई तो उन्होंने ब्लॉक हैंडल को बहाल किया।

साफ है कि ट्विटर हो, फेसबुक हो या ऐसे अन्य मंच, दरअसल वे एक वैचारिकी के पोषक रहे हैं, जबकि घोषित करते रहे हैं कि समानताए लोकतंत्र और मानवता के वे समर्थक हैं। लेकिन सवाल यह है कि एकतरफा वैचारिकी को बढ़ावा देकर, उसके जरिए अराजकता फैलाकर आप मानवतावादी और समतावादी होने का दावा कैसे कर सकते हैं। बहरहाल एलन मस्क ने इस दावे की पोल खोल दी है।

ट्विटर का अधिग्रहण करते हुए एलन मस्क ने अपने ट्विटर हैंडल के जरिए जो लिखा, उस पर ध्यान दिया जाना चाहिए। उन्होंने लिखा, मैंने पैसा कमाने के लिए ट्विटर के साथ सौदा नहीं किया है। मैंने यह सौदा मानवता के लिए किया है, जिससे मुझे प्यार है, मैं यह पूरी विनम्रता के साथ कर रहा हूं क्योंकि ऐसे लक्ष्य को हासिल करने में असफलता मिले, ऐसा संभव है, ये मानकर चलना चाहिए।

एलन मस्क का यह फैसला पता नहीं मानवता के पक्ष में कितना है, लेकिन यह तय है कि उनके हाथ में ट्विटर आने के बाद वामवैचारिकी का कथित समतावादी सोच का गुब्बारा फट गया है। इसका असर सामाजिक और राजनीतिक रूप पर दुनिया पर पड़ेगा। अमेरिका में ट्रंप का सक्रिय होना और ट्विटर पर उनकी उपस्थिति नया गुल जरूर खिलाएगी।

भारत के संदर्भ में अभी मस्क के बदलाव पूरे नहीं हुए हैं। लेकिन एक बार वे पूरे हुए तो उसका असर भारतीय राजनीति और यहां हाल के दिनों में सोशल मीडिया पर उभरती वाम वैचारिकी पर भी पड़े बिना नहीं रहेगा।

ट्विटर का अधिग्रहण करते हुए एलन मस्क ने अपने ट्विटर हैंडल के जरिए जो लिखा, उस पर ध्यान दिया जाना चाहिए। उन्होंने लिखा, मैंने पैसा कमाने के लिए ट्विटर के साथ सौदा नहीं किया है। मैंने यह सौदा मानवता के लिए किया है, जिससे मुझे प्यार है, मैं यह पूरी विनम्रता के साथ कर रहा हूं क्योंकि ऐसे लक्ष्य को हासिल करने में असफलता मिले, ऐसा संभव है, ये मानकर चलना चाहिए...

संचारीय इकोसिस्टम का अंदरूनी यथार्थ 'ट्विटर फाइल्स'

❑ डॉ. जयप्रकाश सिंह

ट्विटर की सार्वजनिक-विमर्श को प्रभावित करने की ताकत पर सबसे बड़ी बहस तब छिड़ी थी, जब अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का ट्विटर अकाउंट 8 जनवरी, 2021 को सस्पेंड कर दिया गया था। `हिंसा को आगे भी प्रोत्साहन मिलने के खतरों' का तर्क देकर ट्विटर ने डोनाल्ड ट्रंप का अकाउंट निलम्बित कर दिया था...

संचारीय दुनिया का यह स्याह पक्ष है कि कुछ सच कभी भी सार्वजनिक परिधि में नहीं आ पाते। सार्वजनिक निर्णयों की समीक्षा संचारीय क्षेत्र में हो जाती है लेकिन संचारीय निर्णय प्राय: सार्वजनिक पहुंच के बाहर ही रह जाते हैं। कुछ घटनाओं और निर्णयों की प्रकृति को देखकर सहज संदेह होता है कि उनमें पूर्वाग्रह है, लेकिन पूर्वाग्रहों को साबित करने वाला सच प्राय: दबा ही रह जाता है। इस दृष्टि से देखें तो ट्विटर फाइल्स संचारीय दुनिया में होने वाले पूर्वाग्रही निर्णयों की सबसे बड़ी आत्म-स्वीकृति है। इसका महत्त्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि यह आत्म-स्वीकृति एक वैश्विक, आधुनिक और प्रभावी माने जाने वाले प्लेटफॉर्म की तरफ से आई है।

ट्विटर की सार्वजनिक-विमर्श को प्रभावित करने की ताकत पर सबसे बड़ी बहस तब छिड़ी थी, जब अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का ट्विटर अकाउंट 8 जनवरी, 2021 को सस्पेंड कर दिया गया था। 'हिंसा को आगे भी प्रोत्साहन मिलने के खतरों' का तर्क देकर ट्विटर ने डोनाल्ड ट्रंप का अकाउंट निलम्बित कर दिया था। अकाउंट को सस्पेंड करने के लिए जो कारण दिया गयाए वह अधिकांश लोगों के गले नहीं उतरा। तब यह प्रश्न उठा था कि क्या ट्विटर अपनी तरफसे सार्वजनिक अव्यवस्था का अंदेशा व्यक्त कर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हनन कर सकता है। और यह भी कि यदि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप जैसे व्यक्ति के बारे में ट्विटर अपारदर्शी तरीके से निर्णय ले सकता है तो असहमति रखने वाले साधारण व्यक्तियों के बारे में उसके रवैये का केवल अंदाजा ही लगाया जा सकता है। अकाउंट ब्लॉक होने के बाद राष्ट्रपति ट्रंप ने इस पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की थी और ट्विटर पर पूर्वाग्रही होने का आरोप लगाया था। उन्होंने अमेरिकी राष्ट्रपति के ट्विटर अकाउंट से ट्वीट करते हुए कहा था, 'हमारी आवाज को नहीं दबाया जा सकता। ट्विटर का वाक्-स्वतंत्रता से कुछ भी लेना नहीं। वह उग्र वामपंथ को बढ़ावा देने वाला प्लेटफॉर्म है, जहां पर दुनिया के कुछ सर्वाधिक शातिर लोगों को बोलने की अनुमति मिली हुई है।' ट्विटर पर पूर्वाग्रही होने के आरोपों पर तब नए सिरे से बहस छिड़ी, जब ट्विटर अधिग्रहण की प्रतिक्रिया के दौरान एलन मस्क ने कई बार ट्विटर के पूर्वाग्रहों को लेकर निशाना साधा। 9 मई, 2022 को उन्होंने निशाना साधते हुए ट्वीट किया कि ट्विटर एक मजबूत वामपंथी पूर्वाग्रह के साथ काम करता है। 14 जून, 2022 को मस्क ने फिर से ट्वीट करते हुए लिखा, एक प्लेटफॉर्म को समावेशी और निष्पक्ष नहीं माना जा सकता यदि वह आधे देश के खिलाफ पूर्वाग्रह रखता हो।

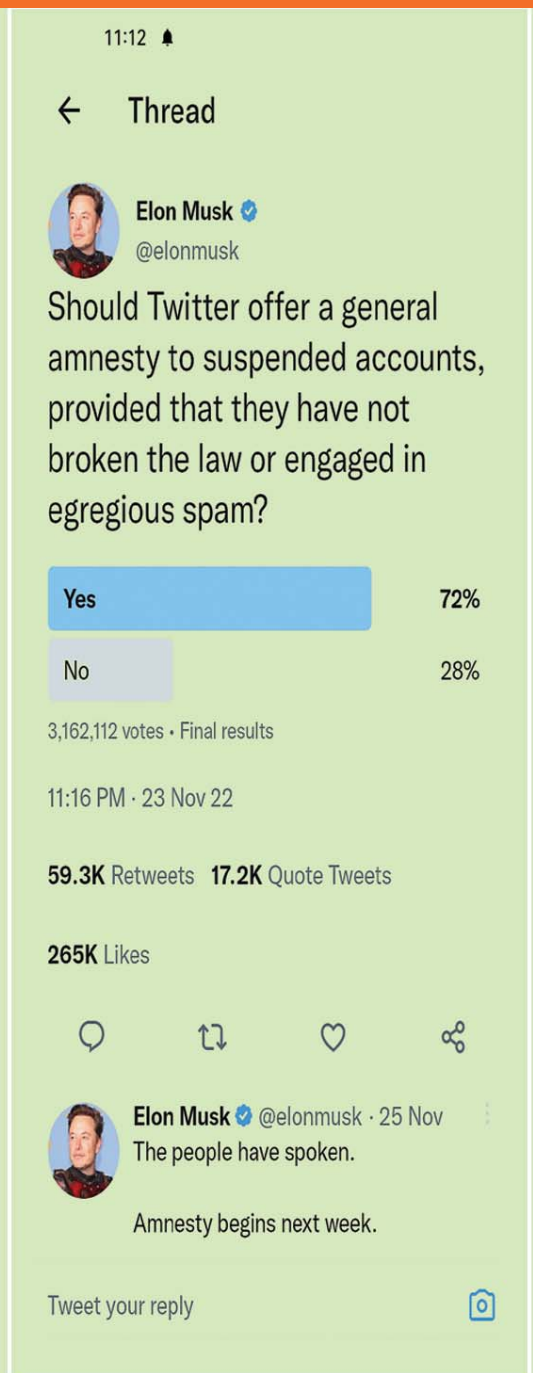

राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अथवा एलन मस्क के बयान ट्विटर द्वारा लिए गए निर्णयों के पैटर्न से बनी धारणा की उपज थे। लेकिन ट्विटर पर लिए जा रहे संचारीय निर्णयों की प्रक्रिया सार्वजनिक नहीं होने के कारण पूर्वाग्रहों के बारे मे प्रामाणिक ढंग से कुछ नहीं कहा जा सकता था। अब एलन मस्क ने पत्रकारों और लेखकों के माध्यम से ट्विटर की आंतरिक निर्णय प्रक्रिया को सार्वजनिक कर उसके पूर्वाग्रहों और दुराग्रहों के बारे में सार्वजनिक ढंग से कहने के लिए आधार उपलब्ध करा दिया है।

क्या है ट्विटर फाइल्स

ट्विटर फाइल्स का संबंध ट्विटर की कंटेंट मॉडरेशन पॉलिसी से है। 28 नवंबर, 2022 को एलन मस्क ने ट्वीट किया कि वाक् स्वतंत्रता के दमन से संबंधित ट्विटर फाइल्स जल्द ही ट्विटर पर प्रकाशित की जाएगी। दो दिसंबर, 2022 में शृंखलाबद्ध तरीके से तीन पत्रकारों मैट तायबी, बारी विसए ली फंग और और लेखक माइकल सैलेनबर्गर तथा डेविड ज्विग के माध्यम से कुछ हाई प्रोफाइल मामलों में ट्विटर के कंटेंट मॉडरेशन से संबंधित आंतरिक दस्तावेजों को सार्वजनिक करने की प्रक्रिया प्रारंभ हुई। ये दस्तावेज ट्विटर थ्रेड्स के रूप में जारी किए जा रहे हैं।

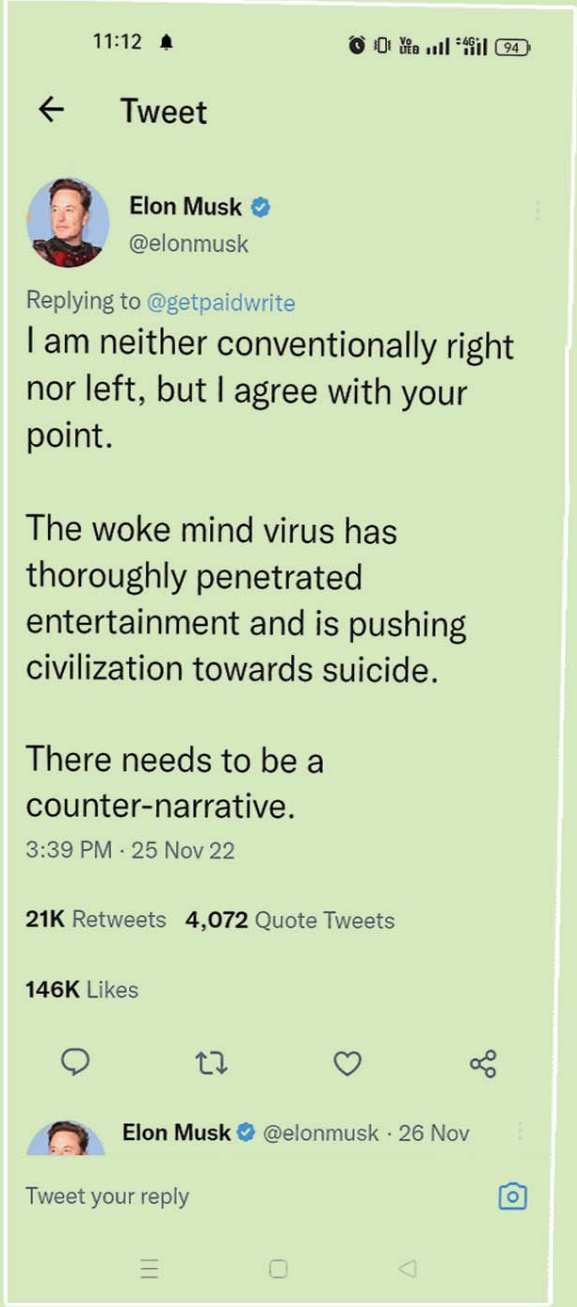

ट्रंप के अकाउंट का निलम्बित करने की हठधर्मिता

वैसे तो ट्विटर फाइल्स की सभी शृंखलाएं ट्विटर की कंटेंट मॉडरेशन पॉलिसी पर सवाल खड़ा करती हैं, लेकिन सबसे अधिक कौतुहल तीसरी, चौथी और पांचवीं शृंखला ने पैदा किया। इन शृंखलाओं का संबंध पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के ट्विटर अकाउंट को सस्पेंड करने से जुड़ा हुआ है। ट्विटर फाइल्स की नौ दिसंबर को जारी तीसरी शृंखला में ट्रंप के ट्विटर अकाउंट को सस्पेंड करने में अपनायी गई निर्णय प्रक्रिया और उससे संबंधित दस्तावेजों को जारी किया गया है।

मैट तायबी ने दस्तावेजों को जारी करते हुए कहा कि राष्ट्रपति से जुड़े मामले में भी ट्विटर अधिकारियों की एक टीम ने 'कंटेंट मॉडरेशन की उच्च गति वाले उच्चतम न्यायालय' के रूप में कार्य किया, जिसके निर्णय प्राय: अनुमानों और गूगल सर्च जैसे संसाधनों पर निर्भर थे। 8 जनवरी, 2021 को ट्रंप ने दो ट्वीट किए थे। एक ट्वीट में उन्होंने अपने वोटरों को 'अमेरिकी देशभक्त' बताया था और दूसरे में यह सूचना दी थी कि वह जो बाइडन के आयोजन में नहीं जाएंगे। इन दोनों ट्वीट में कहीं भी ट्विटर की मॉडरेशन पॉलिसी का उल्लंघन नहीं हो रहा था। लेकिन संभावित राजनीतिक हिंसा का अनुमान लगाकर उनका अकाउंट पहले अस्थायी और फिर स्थायी रूप से निलम्बित कर दिया गया। चौथी और पांचवीं शृंखला में भी ट्रंप के ट्विटर अकाउंट के निलम्बन से संबंधित प्रक्रिया में निहित खामियों के दस्तावेजों को सार्वजनिक किया गया है।

वैसे तो ट्विटर फाइल्स की सभी शृंखलाएं ट्विटर की कंटेंट मॉडरेशन पॉलिसी पर सवाल खड़ा करती हैं, लेकिन सबसे अधिक कौतुहल तीसरी, चौथी और पांचवीं शृंखला ने पैदा किया। इन शृंखलाओं का संबंध पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के ट्विटर अकाउंट को सस्पेंड करने से जुड़ा हुआ है। ट्विटर फाइल्स की नौ दिसंबर को जारी तीसरी शृंखला में ट्रंप के ट्विटर अकाउंट को सस्पेंड करने में अपनायी गई निर्णय प्रक्रिया और उससे संबंधित दस्तावेजों को जारी किया गया है...

खुफिया एजेंसियों और सेना से गठजोड़

ट्विटर फाइल्स की कुछ कड़ियों में ऐसे दस्तावेज सार्वजनिक किए गए हैं, जिनसे यह पता चलता है कि खुफिया एजेंसियां ट्विटर को कंटेंट मॉडरेशन संबंधित निर्देश देती थीं और ट्विटर इनका पालन भी करता था। यह तथ्य ट्विटर द्वारा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के पैरोकार होने के दावे के बिल्कुल उलट था। आंठवीं शृंखला में हुए इस खुलासे ने ट्विटर की विश्वसनीयता पर संदेह और गहरा कर दिया कि इस प्लेटफॉर्म ने यूनाइटेड स्टेट्स सेंट्रल कमांड के निर्देश मध्य-पूर्व के अनेक देशों में प्रभाव-अभियान में मदद की। इससे यह स्पष्ट होता है कि ट्विटर में वैचारिक दुराग्रह तो कार्य कर ही रहा था, वह सेना के निर्देश पर उसका रणनीतिक-उपकरण बनने के लिए भी तैयार था।

कोविड-19 के दौरान सरकारी प्रसारक बन गया था ट्विटर

26 दिसंबर, 2022 को जारी दसवीं शृंखला में कोविड-19 से संबंधित सूचनाओं को विभिन्न स्तरों पर नियंत्रित करने में ट्विटर ने कैसे भूमिका निभाई, इसकी बानगी दी गई है। ट्विटर फाइल्स की दसवीं किश्त को लेखक डेविड ज्विग ने जारी किया है और दस्तावेजों के माध्यम से यह साबित करने की कोशिश की है कि इस दौरान ट्विटर सरकारी प्रसारक की भूमिका में कार्य कर रहा था। वह सरकार के लिए असुविधाजनक तथ्यों को विमर्श में आने से रोक रहा था। ऐसे डॉक्टर्स और विशेषज्ञों के बारे में संदेह पैदा कर रहा था, जो सरकार से इतर राय रख रहे थे। कोविड-19 के दौरान भारत सहित पूरी दुनिया भर में यह महसूस किया गया था कि सोशल मीडिया पर वैकल्पिक राय देने वाले लोगों की वैधता पर सवाल खड़े किए जा रहे हैं।

8 जनवरी, 2021 को ट्रंप ने दो ट्वीट किए थे। एक ट्वीट में उन्होंने अपने वोटरों को 'अमेरिकी देशभक्त' बताया था और दूसरे में यह सूचना दी थी कि वह जो बाइडन के आयोजन में नहीं जाएंगे। इन दोनों ट्वीट में कहीं भी ट्विटर की मॉडरेशन पॉलिसी का उल्लंघन नहीं हो रहा था। लेकिन संभावित राजनीतिक हिंसा का अनुमान लगाकर उनका अकाउंट पहले अस्थायी और फिर स्थायी रूप से निलम्बित कर दिया गया...

दसवीं किश्त में हार्वर्ड मेडिकल स्कूल के महामारी विशेषज्ञ डॉ. मार्टिन कुलड्रोफ का उदाहरण देकर बताया गया है कि ट्विटर असहमतियों के प्रति किस तरह असहिष्णु था। डॉ. कुलड्रोफ ने यह राय दी थी कि वैक्सीन की आवश्यकता उम्रदराज लोगों को अधिक है, बच्चों को वैक्सीन की आवश्यकता बूढ़ों जैसी नहीं है। डॉक्टर के इस ट्वीट पर बाद में ट्विटर ने 'मिसलीडिंग' का लेबल लगाकर उन्हें 'डिस्क्रेडिट' करने की कोशिश की।

यहां पर एक प्रश्न उठता है कि एलन मस्क ट्विटर फाइल्स के जरिए किन लक्ष्यों को प्राप्त करना चाहते हैं। वह ऐसी मजबूत मीडिया पारिस्थितिकी को चुनौती देने की कोशिश क्यों रहे हैं, जो उनके हितों को नुकसान पहुंचा सकती है। इसका आकलन करते हुए 22 नवंबर, 2020 को रिचर्ड सेमोर ने गार्जियन में लिखा है कि सोशल मीडिया के नए अरबपति मालिक सूचना पारिस्थितिकी को दक्षिण पंथ की तरफ पुन:संतुलित करना चाहते हैं। दुनिया का सबसे अमीर अमीर व्यक्ति होने के बावजूद उन्होंने ट्विटर को खरीदने के बाद जो कुछ भी किया है, उसका व्यावसायिक दृष्टि से कोई अच्छा अर्थ नहीं निकलता। लेकिन ट्विटर में उनकी रुचि व्यावसायिक कारणों से नहीं है। वह स्पष्ट रूप से मानते और सोचते हैं कि ट्विटर का पुराने प्रबंधन का झुकाव वामपंथ की तरफ रहा है और दक्षिणपंथी आंदोलनकारियों के लिए एक मित्रवत माहौल को फिर से स्थापित करना चाहते हैं।

एलन मस्क ट्विटर फाइल्स के जरिए क्या प्राप्त करना चाहते हैं, यह उतना महत्त्वपूर्ण प्रश्न नहीं है। महत्त्वपूर्ण यह है ट्विटर फाइल्स सूचना और संचार पारिस्थितिकी को किस तरह प्रभावित कर सकती है। अब भी शृंखलाबद्ध रूप से आ रहे नए-नए तथ्य स्थापित संचार-पारिस्थितिकी के प्रति अविश्वसनीयता का भाव भर सकते हैं और पूर्वाग्रहों के स्थान को और सीमित कर सकते हैं। क्या इससे सच को अधिक स्थान देने वाली संचार-पारिस्थितिकी का निर्माण हो सकेगा, यह देखने वाली बात होगी।

भारतीय कला का लोकमन

❐ त्रिवेणी प्रसाद तिवारी

भारतीय संदर्भ में कला के आयाम वृहत्तर है। कला केवल रंग, चित्र, मूर्ति एवं स्थापत्य ही नहीं है, मृत्युपर्यंत जी गई अवधि भी एक कला है जिसमें धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पुरुषार्थों को साधते हुए जीवन जीना होता है। जीवन आरंभ से लेकर देह के अवसान तक की समय की सतह पर किसी मनुष्य का जीवनवृत्त एक कला आयाम है। भारतीय समाज जिस तरह जीवन जीता है, उसी तरह कला को भी जीता है। जैसे कलाकार अपनी कल्पना को रूपायित करने के लिए किसी माध्यम में स्वयं को आरोपित करता है, उसमें उद्भावना, स्वरूप का प्रकटीकरण होता है फिर पूर्णता को प्राप्त होकर स्थापित होता है। स्थापित कलारूप अपने जीवनचक्र को ध्वनित करता रहता है। उसी प्रकार भारतीय मनस की स्वाभाविक गति बाह्य से अंतर की ओर होती है। यह स्वाभाविक गति चतुष्टय पदार्थों को साधते हुए परमानंद की ओर ले जाती है। स्व का प्रकटीकरण और उसकी सत्य स्थापना यही जीवन का कला आयाम है। कला और जीवन की गति एक होनी चाहिए। जब जीवन ही कलात्मक हो जाए, तब वस्तु रूप में कुछ गढ़ने की आवश्यकता नहीं रह जाती। भौतिक रूप से रंगों-रेखाओं अथवा वस्तु रूपों के संयोजन की कल्पना तिरोहित हो जाती है। अभिव्यक्ति का स्वरूप बदल जाता है।

जैसे कलाकार अपनी कल्पना को रूपायित करने के लिए किसी माध्यम में स्वयं को आरोपित करता है, उसमें उद्भावना, स्वरूप का प्रकटीकरण होता है फिर पूर्णता को प्राप्त होकर स्थापित होता है। स्थापित कलारूप अपने जीवनचक्र को ध्वनित करता रहता है। उसी प्रकार भारतीय मनस की स्वाभाविक गति बाह्य से अंतर की ओर होती है। यह स्वाभाविक गति चतुष्टय पदार्थों को साधते हुए परमानंद की ओर ले जाती है...

प्रदर्शन का मन नहीं रह जाताए वह चुप हो जाता है।

जीवन के कलात्मक होने का क्या आशय है? कलात्मक होना सत्य से साक्षात् हो जाना है। सत्य... रूप-रस-गंध और शब्द का! सत्य... प्रतीति और प्रमा का! यहां सत्य मात्र एक सच बोलना भर नहीं है, बल्कि दिखाने व देखने के बीच के आश्चर्य भाव का तिरोहित हो जाना है, कहीं गहरे में डूब जाना है जिसमें कुछ गढ़ना, कुछ रच पाना स्वभाव हो जाता है। यह साक्षात्कार अहम भाव से सने मन को लोकमन में परिणित कर देता है। इस स्थिर भाव में स्थायी सौंदर्य भाव आ जाता है जो सर्वत्र रमणीयता ही देखता है। रूप-पदार्थों से भरे इस संसार में सत्य का दर्शन मात्र द्रष्टा बना देता है। यह संत भाव भी है। यह जीवन कला का एक आयाम है जिसमें लोकमन, प्रकृति के मायारूपों को घटते हुए देखता रहता है... कुछ कह नहीं पाता, कुछ गढ़ने को उत्सुक नहीं हो पाता। गढ़ना तो तब हो पाता है, जब रूप और भाव की प्रतीति अलग-अलग रहती है। बिजली की कौंध से अंधेरे में देखे गए अनदेखे का भाव जैसे आश्चर्य से भर देता है और उसे पुन: देखने

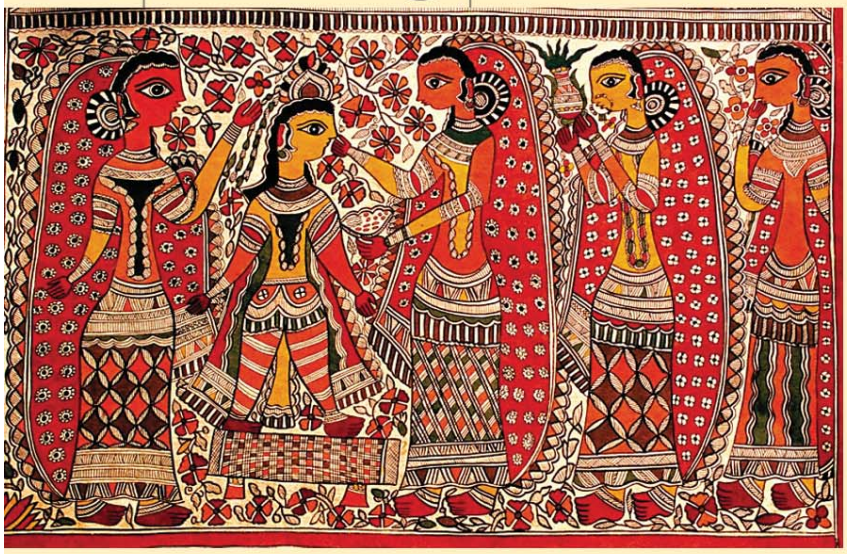

का मन करता है। यह कामना रचने की उत्सुकता पैदा करती है। रचने के बहाने पुन:-पुन: उस रूपध्वनि को महसूस करने का मन होता है। यही रचनेवाला कलामन है। यही अतृप्त सा गीत रचता है, नाट्य करता है, रेखाओं-रंगों से रूपध्वनि को बार-बार उकेरता है। यह व्यग्र भी रहता, न रच पाने के कारण। उग्र भी रहता है चलताऊ माध्यमों चयन को लेकर। रूपबोध में माध्यम का चयन... रूपाभिव्यक्ति में वस्तुकृति का चयन...। यह चयनबोध कलामन का राग-विराग है, जो उसे द्वंद्व में रखती है। चयनबोध हलचल पैदा करती है जिसे तथाकथित पढ़े-लिखे आलोचक 'परंपरा विद्रोह' कहकर क्रांति मूल्य रूप में स्थापित करते रहते हैं, जबकि रचने की वह मात्र एक स्थिति है जो माध्यमों का उच्छेद करती है, लेकिन अभिव्यक्ति की प्राप्ति उस आनंद स्वरूप सौंदर्य में ही होता है। यह रूप सौंदर्य जिस परमानंद की प्राप्ति कराता है, वह ब्रह्मानंदसहोदर रस ही है। यथार्थ-अतियथार्थ (रियलिस्टिक-हाईरियलिस्टिक) तकरीबन भ्रम पैदा कर देने वाला सतह रच देना, सादृश्य गढ़ देना यह सब लोकमन द्वारा नहीं होता, बल्कि सप्रयास होता है, जिसमें कला का अहम भाव ही प्रबल रहता है। भारत का लोकमन बहुत स्थिर और धन्य भाव से भरा हुआ है। अभिव्यक्ति के चोंचले नहीं फैलाता। कोई नया वाद नहीं गढ़ता। वह तो गिरती हुई पीली पत्तियों को देख अपनेपन से मर्त्य भाव का मर्म गुनगुनाने लगता है, 'के तोहरा संग जाई भंवरवा? के तोहरा संग जाई...।' वह कोहबर में पोतनी माटी से लिपकर, पीसे हुए चावल को पानी में घोलकर बने हुए सफेद रंगों में अंगुलियों से आड़े-तिरछे अपने आराध्य ठाकुर का चित्र बनाकर परिवार-कुल की शुभता को प्राप्त कर लेता है। जिसे तथाकथित आधुनिक अंग्रेजीदा लोग कोहबर लोकचित्र शैली कहकर नई विभाजन रेखा खींच देते हैं।

चयनबोध हलचल पैदा करती है जिसे तथाकथित पढ़े-लिखे आलोचक 'परंपरा विद्रोह' कहकर क्रांति मूल्य रूप में स्थापित करते रहते हैं, जबकि रचने की वह मात्र एक स्थिति है जो माध्यमों का उच्छेद करती है, लेकिन अभिव्यक्ति की प्राप्ति उस आनंद स्वरूप सौंदर्य में ही होता है। यह रूप सौंदर्य जिस परमानंद की प्राप्ति कराता है, वह ब्रह्मानंदसहोदर रस ही है...

जब संसाधन की कमी होती है, तो लोकमन मिट्टी का थान (एक ऊंचा ढूहा) बनाकर उसके ऊपर नन्हा सा त्रिकोणीय संरचना वाले मंदिर में किसी जिउतिया, किसी सायर देवी की रचना कर लेता है। वहां किसी डिग्री या आर्किटेक्ट की जरूरत नहीं होती बल्कि उकताए हुए कोरी नएपन की ताक में आधुनिक कलाकार गैलरियों में मिट्टी के थान का ही कॉन्सेप्ट रचकर 'साइट स्पेस्फिक आर्ट' अर्थात् स्थान विशेष की संस्थापन कला के नाम पर अपनी पीठ थपथपाते हैं और लोकमन को धन्यवाद तक नहीं देते। क्योंकि लोकमन का विश्वासए उसके भाव, उसकी सहजता, उसका नृत्तमन पश्चिमाभिमुखी आधुनिकों के लिए कच्चे माल की तरह है, जिसे नएपन के नाम पर सीमित पके-अघाये पिपासु कलादर्शकों के बीच परोसा जाता है।

नया ही रचा जाए यह भूत लोकमन के ऊपर सवार नहीं रहता अथवा केवल मेरी ही रचना हो यह हठ भी नहीं होता। वह किसी की भी रचना में अपना मन पा लेता है लेकिन शर्त यही है कि उसमें माटी की सुगंध हो। भारतीय लोकमन पर मनन करते

हुए हम पाते हैं कि उसमें प्रयास पर बल नहीं दिया जाता। वहां सप्रयास सादृश्य का आश्चर्य नहीं पैदा किया जाता जैसा कि अतियथार्थवादी चित्रण की पाश्चात्य अनुकरण शैली में होता है। इसमें कला के किन्हीं एक सिद्धांतों का वाद नहीं होती, बल्कि समधुर सामंजस्य है भावों का। अनगढ़ सी खींची गई रेखाओं से मानव अंकन होते-होते उसी में से पेड़-पौधे फूल-पत्तियां निकलने लगती हैं जैसे भगवान विष्णु के नाभि से कमल पर बैठे हुए ब्रह्मा। लोककलाओं यह मुहावरा उसके अपने सांस्कृतिक-धार्मिक जड़ों से जुड़े होने का संकेत मिलता है। भारतीय लोकमन अपनी ही किसी भटियाली धुन में गुनगुनाता रहता है। उसके भाव जब विह्वल हो असंख्य मनों में छलकने लगते हैं, तो जीवनछंद रचित होने लगता है। यह जीवनछंद व्यक्तिगत नहीं होता। जिस महान जीवनवृत्त में पूरे समाज की लय समाई रहती है, उस अनुकरणीय को बार-बार गढ़ता रहता है। इसीलिए भारतीय कला में सीता-राम और राधा-कृष्ण और बुद्ध-महावीर युगानुसार लोक बनाता रहता है। लोकमन का यह पूर्णभाव जैसे ही किसी कलामन में व्यक्तिगत हो भरे कलश की तरह छलकने लगता है, तब गढ़ना बनाना भी छूटने लगता है। मुनियों की सी मौनता उतरने लगती है। कलामन केवल द्रष्टा रह जाता है। वह सृष्टि की कलाओं नव्यता घटित होते हुए पाता है और कलामन,... ऋषिमन हो जाता है।

कला-विकला ज्योतिष में समय गणना की एक इकाई भी है। चंद्रमा के घटते-बढ़ते आकार को, उस अंश को भी कला कहा जाता है। भूतभावन भगवान भोलेशंकर के स्वरूप निर्माण में उनके माथे पर द्वितीया की चंद्र कला बनाई जाती है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम और लीलाधर श्रीकृष्ण के संपूर्ण जीवनलीला को अलग-अलग कलापूर्ण अर्थों में माना जाता है। राम जहां चौदह कलामय हैं वहीं श्रीकृष्ण सोलह कलापूर्ण अवतार हैं। विभिन्न देवताओं और मानवों को भी अलग-अलग कला रूप में माना जाता है। जिस तरह कलाशास्त्रीय ग्रंथों में रूपों के चित्रण के प्रमाण में प्रतिमा माप का विधान है, उसी तरह कला भी सत्य एवं धर्मानुकूल जिए गए जीवन की जीवंत इकाई है। यह रूप गढ़ने कीए चित्रित करने की स्थूल इकाई से भिन्न है। मनुष्य जीवन ही कला अंश है। 'कला' समय का ही एक परिप्रेक्ष्य है, जिसमें घटित जीवन की विराटता को विभिन्न ताल-मान के अनुसार गढ़ने की चेष्टा कलाकार करता है।

चित्र-मूर्ति में उस 'कला' की उपस्थिति ही प्राणछंद कहलाती है। यह एक ताप है, जिसकी ऊष्मा रंगों में उतरती है। यह धीरे-धीरे बीते हुए काल का तीव्र रेखाओं में भरी, वह गतिज ऊर्जा है जिसकी साधना कलाकार की सफलता है। प्राणछंद किसी चित्रकृति का ध्वनित होता हुआ वह राग है जिसे देख-सुनकर आप अभिभूत हो जाते हैं... बार-बार देखते हैं... बड़ी देर तलक देखते रह जाते हैं। वह जीवनछंद, वह ध्वनन राम-कृष्ण, बुद्ध-महावीर के जीवन में अधिक गुंजायमान है इसीलिए जब-जब चित्रकारों की कूंची चली है, तो इन्हीं के जीवनवृत्त को बार-बार रंगा है। अजंता हो, एलोरा हो या एलिफैंटा अथवा बादामी की गुफाएं सभी कलातीर्थों में उसी प्राणछंद को ही रचने में कलाकारों की कई पीढ़ियां लय हो गईं जिनको भारत का लोक आज भी कबीर, सूर, तुलसी और मीरा के शब्दों में गुनगुनाता रहता है। लोकमन की सहजता जीवन को व्यापक स्वरूप में देखती है, बिना किसी महत्त्वाकांक्षा के। उसमें जीवन के अनुभूत क्षणों कोए उससे झिरते जीवनसत्य को महसूस करने की भावनाएं अधिक घनी होती हैं। यही घनीभूत ऊष्मित क्षण प्राणछंद बन तिरते हैं जिसकी ध्वनियां भारत के लोक-लोक में झंकृत होती रहती है। उन अनुनादित कलासमय को ही कलाकार किसी कस्तूरी मृग सा विह्वल हो हमेशा बनाता रहता है।

चित्र-मूर्ति में उस 'कला' की उपस्थिति ही प्राणछंद कहलाती है। यह एक ताप है, जिसकी ऊष्मा रंगों में उतरती है। यह धीरे-धीरे बीते हुए काल का तीव्र रेखाओं में भरी, वह गतिज ऊर्जा है जिसकी साधना कलाकार की सफलता है। प्राणछंद किसी चित्रकृति का ध्वनित होता हुआ वह राग है जिसे देख-सुनकर आप अभिभूत हो जाते हैं... बार-बार देखते हैं... बड़ी देर तलक देखते रह जाते हैं...

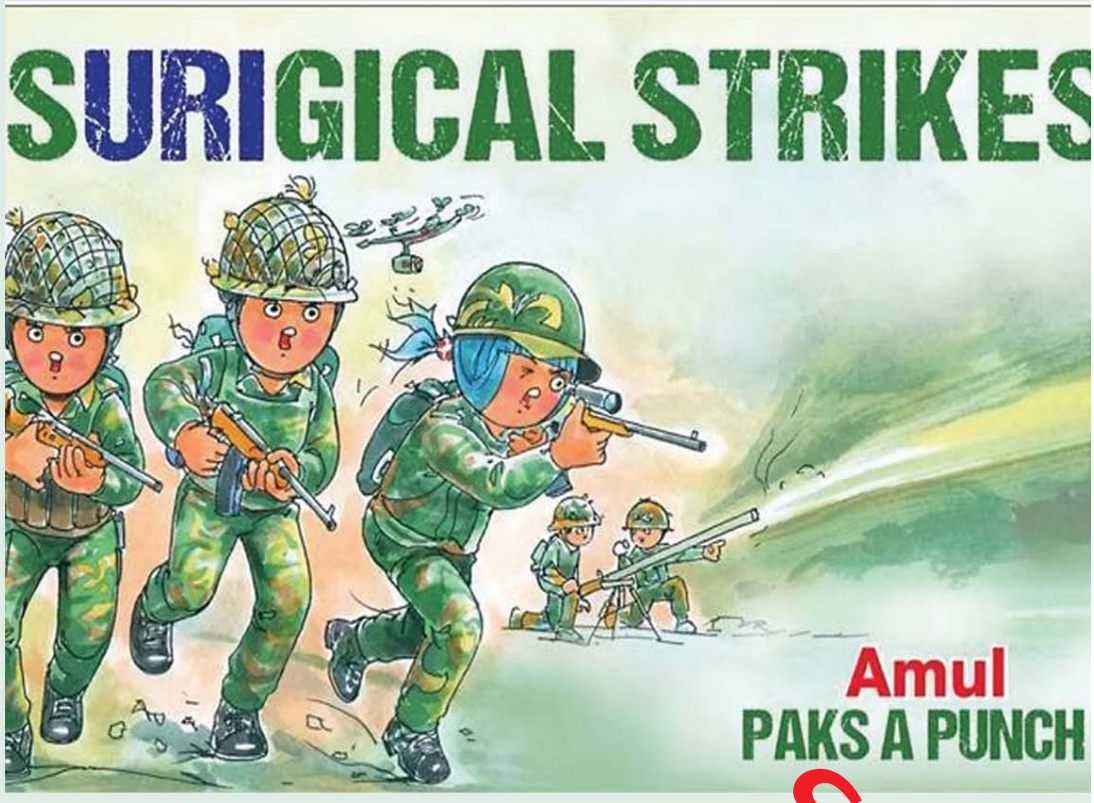

अमूल का अनूठा अभियान

❐ डॉ. रविंद्र सिंह भड़वाल

विश्व कारोबार के क्षेत्र में विशेष पहचान बना चुका सहकारी दुग्ध उत्पादक अमूल अपने उत्पादों के अलावा समसामयिक घटनाओं पर रचनात्मक ढंग से विज्ञापन बनाने के लिए भी चर्चाओं में रहता है। राजनीति, खेल, कारोबार, अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रम से लेकर संचार और संवाद के विषयों पर इसके रचनात्मक विज्ञापनों को एक अच्छी-खासी स्वीकार्यता मिलती रही है। अमूल ने अपने विज्ञापनों में राष्ट्रीय हितों को सदैव सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की है। ऐसे में विज्ञापन के रूप में राष्ट्रीय सरोकारों पर की जाने वाली रोचक टिप्पणियों को लेकर अमूल एक वर्ग विशेष के निशाने पर भी रहा है। इसके बावजूद स्वीकार्यता और आलोचना से बिना प्रभावित हुए अमूल निरंतर प्रचार-प्रसार के साथ संचार के प्रभावी सेतु स्थापित कर रहा है।

विज्ञापन पर कुल बिक्री का महज एक फीसदी खर्च

वित्त वर्ष 2021-22 में 61,000 करोड़ रुपये की कुल कमाई करने वाला अमूल अपने विज्ञापन अभियान पर कुल कमाई का महज एक फीसदी ही खर्च करता है। फास्ट मूविंग कंज्यूमर गुड्ज क्षेत्र की अन्य बड़ी कंपनियां इसके लिए बिक्री का आठ से 15 फीसदी तक का हिस्सा खर्च करती हैं, जो कि अमूल की तुलना में कहीं अधिक है। डॉ. वर्गीज कुरियन ने 1970 के दशक में अमूल को दुनिया की सबसे बड़ी दुग्ध सहकारी संस्था बनाने का लक्ष्य तय किया था। इसके लिए सबसे पहले उन्होंने अमूल ब्रांड को एक विशिष्ट और दमदार पहचान दिलवाने के प्रयास किए।

अमूल ने अपने विज्ञापनों में राष्ट्रीय हितों को सदैव सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की है। ऐसे में विज्ञापन के रूप में राष्ट्रीय सरोकारों पर की जाने वाली रोचक टिप्पणियों को लेकर अमूल एक वर्ग विशेष के निशाने पर भी रहा है...

उन्होंने 1966 में सिल्वेस्टर दा कुन्हा और अपनी विज्ञापन एजेंसी को यह कार्य सौंपा। उस समय बाजार के उनके मुख्य प्रतिद्वंद्वि पोल्सन के लोकप्रिय विज्ञापन मैस्कट के खिलाफ आइकॉनिक अमूल गर्ल को गढ़ा। उस दौरान केरल की एक नन्ही बच्ची शोभा की शक्ल को 'अमूल गर्ल' के रूप में चुना गया। तब अमूल का 'अटरली बटरली डिलिशियस' विज्ञापन अभियान को सबसे लंबे समय तक चले अभियान के रूप में गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया था। अमूल विज्ञापन अभियान की एक खूबी यह भी है कि यह अपने हर उत्पाद के लिए अलग विज्ञापन बनाने के बजाय अमूल को एक अंब्रेला ब्रांड के रूप में प्रचारित-प्रसारित करता है। इससे अमूल को अपनी लागत नियंत्रित करने में भी मदद मिलती है।

सामाजिक जुड़ाव से प्रभावोत्पादक हुए विज्ञापन

नटखट अमूल गर्ल अपनी मौलिक और रचनात्मक शैली से बगैर नाम लिए अमूल के उत्पादों का संदेश लोगों तक पहुंचा देती है। विज्ञापन की इसी अनूठी शैली से अमूल लड़की लोगों की याददाश्त पर एक अमिट छाप छोड़ती आई है। इसका एक कारण यह भी है कि मजेदार और मनोरंजक होने के अलावा इन विज्ञापनों में समाज के मिजाज को पकड़ने का प्रयास किया जाता रहा है। संभवत: इसी सामाजिक जुड़ाव के कारण अमूल के विज्ञापन काफी प्रभावोत्पादक रहे हैं। दूसरा यह कि समसामयिक विषयों पर बिल्कुल सही समय पर विज्ञापन लाने से इसका प्रभाव और भी बढ़ जाता है। इन्हीं खूबियों के कारण अमूल का विज्ञापन अभियान पिछले करीब पांच दशकों से काफी लोकप्रिय बना हुआ है।

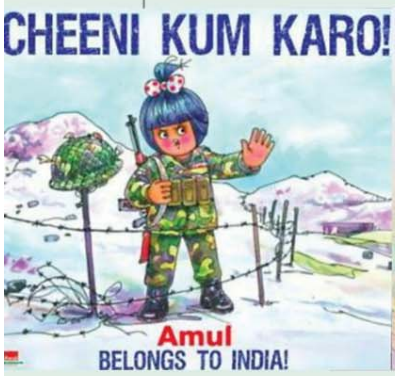

आपातकाल में नसबंदी से जुड़े विज्ञापन ने आकर्षित किया था ध्यान

इंदिरा गांधी ने 25-26 जून, 1975 की आधी रात को देश में आपातकाल लागू कर दिया था। उस आपातकाल की सबसे बड़ी मार प्रेस पर ही पड़ी थी। उस दौर में प्रमुख अखबारों के कार्यालय दिल्ली के जिस बहादुरशाह जफर मार्ग पर थे, वहां की बिजली लाइन काट दी गई, ताकि अगले दिन के अखबार प्रकाशित न हो सकें। जो अखबार छप भी गए, उनके बंडल जब्त कर लिए गए। हॉकरों से अखबार छीन लिए गए। 26 जून की दोपहर होते-होते प्रेस सेंसरशिप लागू कर अभिव्यक्ति की आजादी को रौंद डाला गया। अखबारों के दफ्तरों में अधिकारी बैठा दिए गए। बिना सेंसर अधिकारी की अनुमति के अखबारों में राजनीतिक खबर नहीं छापे जा सकते थे। आपातकाल के उस दौर में संजय गांधी द्वारा नसबंदी कार्यक्रम पर अमूल ने जोरदार टिप्पणी की थी। उस दौरान विज्ञापन के साथ कैप्शन दिया था, 'हमने हमेशा अनिवार्य नसबंदी को अपनाया है।' उस विज्ञापन को रचनात्मक आलोचना का एक बेहतरीन उदाहरण माना जाता रहा है।

मीडिया के एक वर्ग के सहारे झूठे विमर्श गढ़कर भारतीय सेना के मनोबल को गिराने वाले संवाद हुए। उन झूठे विमर्शों को वैधता प्रदान करने के लिए एक साथ हजारों सोशल मीडिया हैंडल सक्रिय हो गए...

सर्जिकल स्ट्राइक से सेना का अभिनंदन

भारतीय सेना द्वारा साल 2016 में पाकिस्तान अधिकृत जम्मू-कश्मीर में दाखिल होकर सर्जिकल स्ट्राइक कर उरी हमले का बदला लिया था। भारतीय सेना के द्वारा सर्जिकल स्ट्राइक कर आतंकवादी ठिकाने नष्ट करने के बाद भारत और भारत के बाहर ऐसे लोगों का एक समूह सक्रिय हो गया, जिन्होंने भारतीय सेना के ऑपरेशन को सुनियोजित तरीके से सवालिया बना दिया था। मीडिया के एक वर्ग के सहारे झूठे विमर्श गढ़कर भारतीय सेना के मनोबल को गिराने वाले संवाद हुए। उन झूठे विमर्शों को वैधता प्रदान करने के लिए एक साथ हजारों सोशल मीडिया हैंडल सक्रिय हो गए। उस पूरे घटनाक्रम में उचित दखल देते हुए अमूल ने भारतीय सेना के साहस और पराक्रम को समर्पित एक विज्ञापन जारी किया। इसमें भारतीय सैनिकों को हाथों में हथियार लेकर सर्जिकल स्ट्राइक को अंजाम देते हुए दिखाया था। यह महज एक विज्ञापन नहीं था, बल्कि उन तमाम झूठे विमर्शों के खंडन के साथ-साथ भारत के साहसी सैनिकों के पराक्रम का भी अभिनंदन था। उस समय वह विज्ञापन काफी चर्चित हुआ था।

चीन के विरोध को लेकर ब्लॉक कर दिया था ट्विटर अकाउंट

वर्ष 2020 में एक विशेष विज्ञापन अभियान के जरिए अमूल ने चीन के खिलाफ मुहिम छेड़ दी थी। उस दौरान लाल और सफेद रंग की पोशाक पहनी आइकॉनिक अमूल गर्ल को एक ड्रैगन से लड़कर अपने देश को बचाते हुए दिखाया गया। वह अभियान अमूल ने चीनी उत्पादों के बहिष्कार के समर्थन में चलाया था। उस विज्ञापन में बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था, 'मेड इन इंडिया' ब्रांड है और उसका फोकस भारत सरकार की आत्मनिर्भर मुहिम का समर्थन करने पर था। उस मुहिम के खिलाफ अमूल के ट्विटर अकाउंट को माइक्रो-ब्लॉगिंग वेबसाइट ट्विटर ने ब्लॉक कर दिया। अमूल का ट्विटर अकाउंट ब्लॉक होते ही ट्विटर यूजर्स के बीच यह बड़ा मुद्दा बन गया। हालांकि, कुछ देर बाद ट्विटर ने वापस अकाउंट को बहाल कर दिया था।

अमूल विज्ञापन अभियान का मौजूदा महत्त्व

अपनी कुल कमाई का महज एक फीसदी खर्च कर भी पांच दशकों से दुनिया भर में लोकप्रिय बना अमूल का विज्ञापन अभियान अब तक के सबसे सफलतम प्रचार अभियानों में शुमार है। इसका सबसे बड़ा कारण इस अभियान का समाज के साथ भावनात्मक जुड़ाव माना जाएगा। इसके अलावा इसने भारतीय और अभारतीय के भेद को भलीभांति समझते हुए भारतीय हितों को सर्वोच्च महत्ता प्रदान की है। भारतीय हितों के अनुरूप विज्ञापन के विषयों के चयन के चलते इसे एक प्रचार अभियान से कहीं बढ़कर भारत के सांस्कृतिक परिदृश्य का भी हिस्सा बन गया है। वहीं, समसामयिक विषयों पर सही समय पर बेहद रचनात्मक और रोचक अभिव्यक्ति इसे एक वृहद् स्वीकार्यता प्रदान करती है। लिहाजा किसी भी कारोबार को चमकाने का काम करने वाली विज्ञापन संस्थाएं अमूल के विज्ञापन अभियान से काफी कुछ सीख सकती हैं।

फर्जी सूचनाओं पर नकेल कसेगी 'वर्चुअल जेल'

❑ डॉ. रविंद्र सिंह भड़वाल

माइक्रो-ब्लॉगिंग साइट ट्विटर को खरीदने के बाद एलन मस्क इसमें स्टाफ से लेकर संचालन के स्तर पर लगातार बड़े बदलाव कर रहे हैं। एक ऑनलाइन जनमत के जरिए जनता से रायशुमारी के बाद उन्होंने अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का ट्विटर अकाउंट पुन: बहाल कर दिया, वहीं पूर्व के नि:शुल्क नीले रंग के ब्लू टिक की जगह अब अलग-अलग रंगों का टिक पैसे के भुगतान के साथ शुरू किया है।

हाल ही के एक फैसले के अनुसार ट्विटर पर भ्रामक या झूठी सूचनाओं पर नकेल कसने के लिए अब वह ट्विटर पर एक नया फीचर 'वुर्चुअल जेल' लाने की तैयारी में हैं। इसके तहत सूचनाओं को साझा करते समय कोई यूजर अगर कंपनी की नीति का उल्लंघन करता है, तो उस यूजर को वर्चुअल जेल में डाला जाएगा।

ट्विटर पर वर्चुअल जेल को इसकी शाब्दिक संरचना के आधार पर समझने का प्रयास करते हैं। वर्चुअल जेल दो शब्दों 'वर्चुअल' और 'जेल' के योग से बना है। वर्चुअल का हिंदी अर्थ होता है आभासी। आभासी को अगर सरल भाषा में समझा जाए तो ऐसी चीज जो वास्तविकता में नहीं है, मगर आप किसी माध्यम के द्वारा उसे देख सकते हैं या महसूस कर सकते हैं। जैसे विडियो गेम्स, एनिमेटेड फिल्म, कार्टून आदि। इंटरनेट का उपयोग बढ़ने के साथ-साथ इस वर्चुअल यानी आभासी दुनिया का दायरा लगातार विस्तृत होता जा रहा है।

जेल शब्द का हिंदी अर्थ कारागार या बंदीगृह है। जेल ऐसा स्थान या भवन है, जिसमें राज्य द्वारा विचाराधीन अपराधियों या अपराध-सिद्ध अपराधियों को बंदी बनाकर रखा जाता है। कारागार में उन्हें अनेक प्रकार की स्वतंत्रताओं से वंचित रखा जाता है। समाज में शांति स्थापित रहे इसके लिए हर देश का एक कानून होता है। कानून का उल्लंघन करने वालों को कानून का रखवाला यानी प्रहरी अथवा पुलिस पकड़ती है और जब तक उस पर न्यायालय में कोई सुनवाई नहीं हो जाती, तब तक पुलिस उस अपराधी या दोषी को अपने गिरफ्त में रखती है।

वर्चुअल का हिंदी अर्थ होता है आभासी। आभासी को अगर सरल भाषा में समझा जाए तो ऐसी चीज जो वास्तविकता में नहीं है, मगर आप किसी माध्यम के द्वारा उसे देख सकते हैं या महसूस कर सकते हैं। जैसे विडियो गेम्स, एनिमेटेड फिल्म, कार्टून आदि। इंटरनेट का उपयोग बढ़ने के साथ-साथ इस वर्चुअल यानी आभासी दुनिया का दायरा लगातार विस्तृत होता जा रहा है...

ट्विटर की ओर से शुरू की जा रही वर्चुअल जेल वास्तविक जेल नहीं, बल्कि एक वर्चुअल जेल है। कंपनी के नए मालिक एलन मस्क ट्विटर पर गलत और भड़काऊ ट्वीट करने वालों पर नकेल कसने के लिए वर्चुअल जेल का फीचर लाने की तैयारियां कर रहे हैं। कंपनी की नीति का उल्लंघन होने पर यूजर्स को इस वर्चुअल जेल में डाला जाएगा। हालांकि यह फीचर अभी आया नहीं है। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार एक यूजर के सुझाव पर एलन मस्क ने इसके लिए हामी भरी है। यदि वास्तव में वर्चुअल जेल का फीचर आता है तो पॉलिसी उल्लंघन के बाद यूजर्स की प्रोफाइल फोटो पर जेल का आइकन लग जाएगा। इसके बाद वे किसी भी तरह का ट्वीट नहीं कर पाएंगे और किसी पोस्ट पर लाइक या कॉमेंट भी नहीं कर पाएंगे। यह भी सुझाव दिया गया है कि जेल के आइकन के साथ यूजर को बताया जाएगा कि उनका अकाउंट जेल से कब मुक्त होगा।

बिम्बिसार: सिनेमाई सर्जनात्मकता को नई ऊंचाई

❐ मौनस तलवार

नया माध्यम होने के कारण सिनेमा की बात शुरू होते ही यह प्रश्न जरूर उठता है कि पुरानी मान्यताओं और परम्पराओं को नई पीढ़ी तक कैसे परोसा जाए? यह प्रश्न एक माध्यम के रूप में सिनेमा के सामर्थ्य से अधिक उसकी आर्थिकी से जुड़ा हुआ प्रश्न है, दर्शकों के जुड़ाव से संबंधित है।

यह सच है कि सिनेमाई दुनिया भविष्य को मनोरंजक बनाकर प्रस्तुत करने में अधिक सहज महसूस करती है। अतीत को मनोरंजक बनाकर प्रस्तुत करना अधिक चुनौतीपूर्ण होता है। अतीत के चुनौतीपूर्ण होने के कई कारण हैं। पहली चुनौती यह है कि भविष्य के संभावित पैटर्न को लेकर व्यक्तिगत धारणाएं नहीं बनती, जबकि अतीत के बारे में प्रत्येक दर्शक के पास अपनी धारणाएं होती हैं। भविष्य सिनेमा को उड़ान के लिए उन्मुक्त गगन देता है, जबकि अतीत के फिल्मांकन के लिए हर कदम पर कठोर यथार्थ का सामना करना पड़ता है।

भारतीय सिनेमा भी अतीत के फिल्मांकन को लेकर संघर्षरत रहा है, लेकिन हाल-फिलहाल आई कुछ फिल्में इस बात की पुष्टि करती है कि अब अतीत का फिल्मांकन पहले से बेहतर ढंग से हो रहा है। बिम्बिसार अतीत को बेहतर और मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत करने वाली फिल्म की नई कड़ी है। यह भी रोचक है कि इस फिल्म की कहानी भी अतीत और वर्तमान के बीच समानांतर रूप से चलती है और इस क्रम में दर्शकों को समय की दो धाराओं के यथार्थ से भी परिचित कराती रहती है।

फिल्म ऐतिहासिक यथार्थ होने का दावा नहीं करती, लेकिन कहानी और उसका नाम यह बताता है कि फिल्म गहरे इतिहास बोध से प्रेरित है। उदाहरण के लिए फिल्म में बिम्बिसार त्रिगर्तला नामक राज्य का राजा है। त्रिगर्तला से त्रिगर्त क्षेत्र और त्रिगर्त राज्य की अनुगूंज सुनाई पड़ती है...

फिल्म ऐतिहासिक यथार्थ होने का दावा नहीं करती, लेकिन कहानी और उसका नाम यह बताता है कि फिल्म गहरे इतिहास बोध से प्रेरित है। उदाहरण के लिए फिल्म में बिम्बिसार त्रिगर्तला नामक राज्य का राजा है। त्रिगर्तला से त्रिगर्त क्षेत्र और त्रिगर्त राज्य की अनुगूंज सुनाई पड़ती है।अतीत को सक्षम ढंग से अभिव्यक्ति करने में फिल्म बाहुबली नया मानदण्ड स्थापित किया था। बिम्बिसार पर भी बाहुबली की स्पष्ट छाप देखी जा सकती है। राज-दरबार में राजा के प्रवेश करने का दृश्य हो अथवा राज-भवन के कई स्तरों पर फिल्मांकन की बात हो, दोनों जगह पर बाहुबली को महसूस किया जा सकता है।

फिल्म का संगीत तो बाहुबली की परम्परा को आगे बढ़ाने वाला है। 'समर प्रखरधीरा शूरा, बिम्बिसारा' की पंक्तियां तो वैसी ही सिहरन पैदा करती है, जैसी बाहुबली में कई जगह पर महसूस की गई थी। अन्य संगीतकारों के साथ एम.एम. कीरावानी ने इस फिल्म को संगीत के जरिए एक नया आकर्षण पैदा किया है।

बिम्बिसार जैसी फिल्में देखने के बाद हर बार मन में एक ख्याल जरूर आता है कि बॉलीवुड ऐसी फिल्में देने में क्यों अक्षम है। पिछले कुछ महीनों में आई फिल्मों के बजट को देखकर लगता है कि बॉलीवुड की समस्या बजट से अधिक बड़ी है। वह दर्शकों को सर्जनात्मकता और संवादों के जरिए उस तरह से नहीं बांध पा रहा है, जैसा कि दक्षिण का सिनेमा। इसका कारण आर्थिक से अधिक सांस्कृतिक है। फिलहाल बॉलीवुड इस तथ्य को स्वीकार करने के बजाय दोषारोपण में व्यस्त है और इसी कारण, वहां पर सुधार के कोई लक्षण नहीं दिख रहे हैं।

'विक्टिम कार्ड' की पूर्वाग्रही पत्रकारिता

❒ **सूर्य प्रकाश**

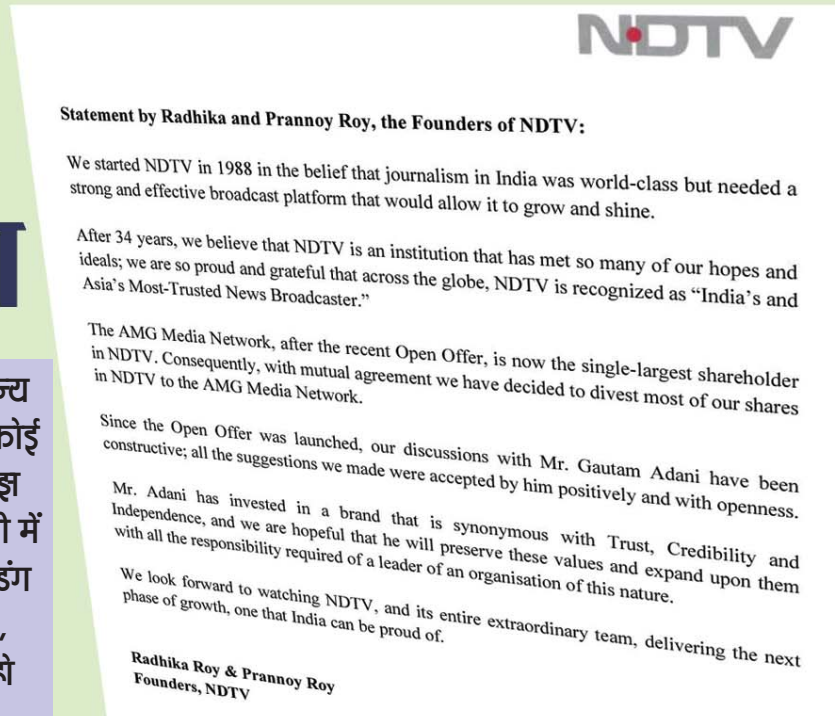

बीते साल के आखिरी महीने में सोशल मीडिया से लेकर मेन स्ट्रीम मीडिया तक कई बिकने का दौर जारी रहा। एक तरफ ट्विटर एलन मस्क के हाथों में चला गया तो वहीं भारत में टीवी चैनल एनडीटीवी पर गौतम अडानी की कंपनी का नियंत्रण हो गया। बिग बाजार, एयर इंडिया की तरह ही यह भी एक डील थी, जिसमें एक कंपनी बिक गई और नियंत्रण बेचने वाले से खरीदने वाले के के हाथ में चला गया। कारोबार की सामान्य समझ रखने वाला कोई भी आदमी यह समझ सकता है कि कंपनी में जिसकी शेयर होल्डिंग ज्यादा हो जाती है, उसका ही प्रभुत्व हो जाता है। ऐसा ही एनडीटीवी की डील में भी हुआ।

> **कारोबार की सामान्य समझ रखने वाला कोई भी आदमी यह समझ सकता है कि कंपनी में जिसकी शेयर होल्डिंग ज्यादा हो जाती है, उसका ही प्रभुत्व हो जाता है। ऐसा ही एनडीटीवी की डील में भी हुआ। फिर भी एनडीटीवी के बिकते ही चैनल के एक एंकर ने अपने ही अंदाज में इस्तीफा दिया और इस डील की तुलना उन्होंने एक चिड़िया का घोसला छिन जाने से की...**

फिर भी एनडीटीवी के बिकते ही चैनल के एक एंकर ने अपने ही अंदाज में इस्तीफा दिया और इस डील की तुलना उन्होंने एक चिड़िया का घोसला छिन जाने से की। 30 नवंबर को अपने यूट्यूब चैनल पर उन्होंने कहा, 'आज की शाम एक ऐसी शाम है, जहां चिड़िया को उसका घोसला नजर नहीं आ रहा, क्योंकि उसे कोई दूसरा ले गया है। लेकिन उस चिड़िया के पास थक जाने तक खुला आसमान जरूर है।' इस टिप्पणी के जरिए सत्य से परे दो नैरेटिव तैयार करने की कोशिश की। उन्होंने एक तरफ चिड़िया का घोसला छिन जाने की बात कही तो दूसरी तरफ खुले आसमान उड़ने की बात कहकर खुद को शहीद भी बताने का प्रयास किया। हालांकि उनके इस बयान को उनके ही मालिकान रहे प्रणय रॉय और राधिका रॉय के एक पत्र ने खारिज कर दिया, जिसे उन्होंने अडानी ग्रुप के अधिग्रहण की जानकारी देते हुए लिखा। दोनों ने अपने साझा पत्र में लिखा, 'हाल में जारी किए गए ओपन ऑफर के बाद एएमजी मीडिया नेटवर्क अब एनडीटीवी में सबसे बड़ा शेयर होल्डर है। हमने आपसी सहमति से एनडीटीवी में अपने ज्यादातर शेयरों को उन्हें बेच दिया है। ओपन ऑफर के लॉन्च के बाद से ही गौतम अडानी के साथ हमारी बातचीत रचनात्मक और सकारात्मक रही है। उन्होंने हमारे सभी सुझावों को खुले दिल से और सकारात्मकता के साथ स्वीकार किया है।'

NDTV

Statement by Radhika and Prannoy Roy, the Founders of NDTV:

We started NDTV in 1988 in the belief that journalism in India was world-class but needed a strong and effective broadcast platform that would allow it to grow and shine.

After 34 years, we believe that NDTV is an institution that has met so many of our hopes and ideals; we are so proud and grateful that across the globe, NDTV is recognized as "India's and Asia's Most-Trusted News Broadcaster."

The AMG Media Network, after the recent Open Offer, is now the single-largest shareholder in NDTV. Consequently, with mutual agreement we have decided to divest most of our shares in NDTV to the AMG Media Network.

Since the Open Offer was launched, our discussions with Mr. Gautam Adani have been constructive; all the suggestions we made were accepted by him positively and with openness.

Mr. Adani has invested in a brand that is synonymous with Trust, Credibility and Independence, and we are hopeful that he will preserve these values and expand upon them with all the responsibility required of a leader of an organisation of this nature.

We look forward to watching NDTV, and its entire extraordinary team, delivering the next phase of growth, one that India can be proud of.

Radhika Roy & Prannoy Roy
Founders, NDTV

रॉय दंपति के इस बयान से साफ है कि यह डील एनडीटीवी प्रमोटरों पर थोपी नहीं गई थी बल्कि कारोबारी हितों को ध्यान में रखते हुए उन्होंने अडानी को चैनल सौंप दिया और उसकी वाजिब कीमत हासिल की। फिर भी एंकर महोदय घोसला छिनने की बात कर रहे हैं? दरअसल भारत मे सत्ता के साथ रही पत्रकारिता अब विक्टिम कार्ड खेल के खुद को पाक-साफबताने की कोशिश कर रहे हैं, जबकि नीरा-राडिया टेप प्रकरण से पत्रकारों के इस समूह का सच बहुत पहले ही सार्वजनिक हो चुका है। नैरेटिव और विक्टिम कार्ड की एकपक्षीय रिपोर्टिंग का एंकर महोदय स्वघोषित सिरमौर हैं। उन्होंने एनडीटीवी में रहते हुए अपनी वाकचातुर्य से भरी एंकरिंग के साथ करीब ढाई दशक तक वैचारिक पत्रकारिता की। एक पक्ष और एक नेता के खिलाफ वह हमेशा मोर्चा खोले रहे। यही वजह रही कि निष्पक्ष पत्रकारिता के नाम पर किसी एक विचारधारा के पक्षधर होते चले गए। उनके पूरे व्यक्तित्व और पत्रकारिता की धुरी मोदी विरोध में तब्दील हो गई। यही वजह

है कि एक विचारधारा विशेष के लोग उनका समर्थन करने लगे और दूसरी विचारधारा से जुड़े लोगों के बीच वह हमेशा ट्रोल हुए।

निष्पक्षता की लक्ष्मणरेखा और वाकचातुर्य

निष्पक्षता की बारीक रेखा को वह हमेशा अपने वाकचातुर्य से लांघने का प्रयास करते रहे। अब एक बार फिर से जब चैनल बिका है तो वह खुद को विक्टिम दिखाना चाहते हैं, जबकि किसी चैनल के बिकने का यह पहला मौका नहीं है। देश में पहले भी उदन्त मार्तंड से लेकर जी हिन्दुस्तान तक तमाम चैनल और अखबार अलग-अलग कारणों से बंद हुए हैं। किंतु कोई पत्रकार यूं विक्टिम कार्ड शायद ही खेलने की कोशिश करता दिखाए जैसा वह कर रहे हैं।

जब एनडीटीवी से सैकड़ों पत्रकारों की छंटनी पर रहा सन्नाटा

जब वह यह कहते हैं कि मुझे हटाने और बेरोजगार करने के लिए हजारों करोड़ रुपए लगाए गए तो इसमें भी उनका एक स्तर का अहंमन्यता भाव दिखता है। आज वह एनडीटीवी के बिकने में खुद की बेरोजगारी का विक्टिम कार्ड खेल रहे हैं, जबकि उनकी आखिरी सैलरी 30 लाख रुपये प्रति माह के करीब बताई जाती है। यह वही एंकर हैं, जिन्होंने 2017 में एनडीटीवी में मोजो पत्रकारिता यानी मोबाइल जर्नलिज्म के नाम पर सैकड़ों पत्रकारों के रोजगार छिनने पर शांत थे। अपनी नाक के नीचे श्रमजीवी पत्रकार साथियों की नौकरी जाने में उन्हें कोई षड्यंत्र नहीं दिखा था और वह किसी तरह के करुणा भाव से नहीं भरे थे।

खुद ही ईमानदारी का सर्टिफिकेट

फिर इस बार वह क्यों इतना नाराज और भावुक दिख रहे हैं। इसकी वजह एक विक्टिम कार्ड है, जिसके जरिए वह अब यूट्यूब की दुनिया में छा जाना चाहते हैं। वह खुद को सत्ता से टकराता हुआ इकलौता शख्स दिखाने की कोशिश करते रहे हैं और इसी भाव में दूसरे मीडिया संस्थानों को गोदी मीडिया कहते रहे हैं। रवीश कुमार ईमानदार हो सकते हैं, लेकिन उसका सेल्फ सर्टिफिकेशन और दूसरों पर आरोपों की बौछार में कोई तर्क नहीं है। कम से कम यह इंतजार तो वह कर ही सकते हैं कि इतिहास ही उनके साथ न्याय करे और जनता ही बताए कि कौन कैसा मीडिया है।

मीडिया हलचल

इन्फ्लुएंसर्स पर 50 लाख रुपये तक के जुर्माने की तैयारी

सोशल मीडिया पर प्रॉक्सी ब्रांड प्रोमोशन में शामिल होने वाले या अपने फॉलोअर्स को इसके बारे में बताए बिना प्रचार करने वाले इन्फ्लुएंसर्स पर केंद्र सरकार ने नकेल कसने की तैयारी कर ली है। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो सरकार जल्द ही ऐसे नियम लाने जा रही है, जिसके तहत उन इन्फ्लुएंसर्स पर 50 लाख रुपये तक का जुर्माना लगाया जा सकता है। सोशल मीडिया के विभिन्न मंचों पर कई ऐसे इन्फ्लुएंसर्स सक्रिय हैं, जो अलग-अलग ब्रांड्स के लिए प्रोमोशनल विडियो या कंटेंट बनाते हैं। इन लोगों के फॉलो करने वाले लोग इनसे प्रभावित होकर खरीदारी करते हैं। लेकिन ये इन्फ्लुएंसर्स कभी-कभी पैसे लेकर भी इनका प्रोमोशन करते हैं। केंद्र सरकार सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स के लिए दिशा-निर्देश लेकर आ रही है। इनके तहत अगर वे किसी विशेष उत्पाद या ब्रांड का प्रचार करते हैं, तो उन्हें डिस्क्लेमर लगाकर इसके बारे में जानकारी देनी होगी। उन्हें अपने फॉलोअर्स को बताना होगा कि ऐसा करने के लिए उन्हें कंपनी या ब्रांड द्वारा भुगतान किया गया है। इन दिशा-निर्देशों के जारी होने के बाद अगर ऐसे इन्फ्लुएंसर्स अपने फॉलोअर्स से यह छिपाते हैं कि वे प्रॉक्सी पेड प्रोमोशन में शामिल हैं, तो उनके खिलाफ केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण में शिकायत की जा सकती है। दोषी पाए जाने पर उन पर 50 लाख रुपये तक का जुर्माना लगाया जा सकता है।

एनडीटीवी की 27.26 फीसदी हिस्सेदारी अडानी को बेचेंगे राधिका और प्रणय

नई दिल्ली टेलीविजन लिमिटेड के संस्थापक प्रणय रॉय और राधिका रॉय अपने अधिकांश शेयर अडानी समूह को बेचेंगे। नई दिल्ली टेलीविजन लिमिटेड के संस्थापकों ने 23 दिसंबर, 2022 को इसकी जानकारी दी। उन्होंने कहा कि वह समाचार नेटवर्क में अपने अधिकांश शेयरों को अरबपति गौतम अडानी के समूह में ट्रांसफर करने का फैसला किया है। राधिका और प्रणय रॉय एनडीटीवी में 27.26 फीसदी हिस्सेदारी अडानी को बेचेंगे। वहींए एनडीटीवी के 64.71 फीसदी से अधिक का नियंत्रण समूह को दे देंगे। अडानी समूह इसी महीने ओपन ऑफर के बाद मीडिया कंपनी नई दिल्ली टेलीविजन लिमिटेड का सबसे बड़ा शेयरधारक बन गया था। अडानी समूह ने ओपन ऑफर के जरिए नई दिल्ली टेलीविजन लिमिटेड में अपनी हिस्सेदारी 37 फीसदी से अधिक बढ़ा दी थी। अडानी का समूह एनडीटीवी में 26 फीसदी हिस्सेदारी लेना चाह रहा था, लेकिन खुली पेशकश ने केवल 53 लाख

शेयरों की पेशकश की थी। अडानी को समूह मीडिया कंपनी का सबसे बड़ा शेयरधारक बनने के साथ उसे प्रसारणकर्ता कंपनी का चेयरमैन नियुक्त करने का अधिकार मिल गया था। इससे पहले एनडीटीवी के प्रोमोटर्ज प्रणय रॉय और राधिका रॉय ने तत्काल प्रभाव से निदेशक के पद से इस्तीफा दे दिया था।

ट्विटर पर 60 मिनट तक वीडियो किया जा सकेगा अपलोड

माइक्रो-ब्लॉगिंग साइट ट्विटर को आकर्षक और सुविधाजनक बनाने के लिए इसमें लगातार नये फीचर जोड़े जा रहे हैं। इसी क्रम में एक नया फीचर लंबे वीडियो साझा करने वालों के लिए लाया गया है। इसके तहत ट्विटर पर वीडियो बनाने वाले यूजर्स अब 60 मिनट तक की लंबी अवधि वाला वीडियो अपलोड कर सकेंगे। हालांकि यह सुविधा 'ट्विटर ब्लू' यूजर्स के लिए रहेगी। ट्विटर ब्लू यूजर्स 1080 पिक्सल रिजॉल्यूशन और 2जीबी साइज की फाइल केवल वेब से 60 मिनट तक के वीडियो अपलोड कर सकते हैं। हालांकि यह फीचर अभी आईओएस या एंड्रॉयड पर ट्विटर का उपयोग कर रहे यूजर्स को नहीं मिलेगा। इससे पहले माइक्रो-ब्लॉगिंग प्लेटफॉर्म पर 1080 पिक्सल रिजॉल्यूशन पर केवल 512 एमबी आकार और 10 मिनट की लंबाई तक के वीडियो अपलोड किए जा सकते थे। वहींए इससे पहले ट्विटर ने ट्वीट्स के लिए व्यू काउंट फीचर शुरू किया है। इसके तहत अब यूजर्स वीडियो काउंट की तरह ही अपने ट्वीट का परफॉर्मेंस भी देख पाएंगे। यानी यूजर्ज अब यह देख पाएंगे कि उनका ट्वीट कैसा प्रदर्शन कर रहा है। इससे पहले केवल यूजर ट्वीट एनालिटिक्स के माध्यम से यह जानकारी देख पाते थे।

एलन मस्क ने ट्विटर के सीईओ पद से दिया इस्तीफा

दुनिया के सबसे अमीर शख्स और ट्विटर के नये मालिक एलन मस्क ने ट्विटर के सीईओ पद से इस्तीफा देने की घोषणा की है। ट्विटर में अहम फैसलों के लिए जनमत करवाने वाले मस्क ने 19 दिसंबर की सुबह ट्विटर पर एक जनमत किया था। इस जनमत में नेटिजन्स से पूछा गया था कि क्या मुझे ट्विटर के सीईओ के पद से इस्तीफा दे देना चाहिए। जैसा तुम कहोगे मैं वैसा ही करूंगा। मस्क के इस ट्वीट के बाद विरोध और समर्थन में कई टिप्पणियां आईं। इस पोल पर 57.5 फीसदी लोगों ने मस्क के इस्तीफा देने के पक्ष में वोट किया है। 42.5 फीसदी लोगों के मुताबिक मस्क को इस्तीफा नहीं देना चाहिए। इसी जनमत के तहत एलन मस्क ने सीईओ के पद से हटने का फैसला किया है। एलन मस्क ने इसके बाद ट्वीट कर बताया कि 'मैंने ट्विटर के सीईओ पद से इस्तीफा देने का फैसला किया है। मैं जैसे ही किसी को ट्विटर के सीईओ का पद संभालने के लिए जितना संभव हो उतना बेवकूफ पाता हूं, मैं इस्तीफा दे दूंगा। उसके बाद मैं सिर्फ सॉफ्टवेयर चलाऊंगा और सर्वर टीम की देखभाल करूंगा।' मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो मस्क स्टीव डेविस को ट्विटर की जिम्मेदारी दे सकते हैं। स्टीव पिछले दो महीने से ट्विटर हेडक्वार्टर में रह रहे हैं।

डॉक्टर की लिखी पर्ची को सरल रूप में समझाएगा गूगल

गूगल ने हाल ही में एक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और मशीन लर्निंग (एमएल) मॉडल की घोषणा की है। गूगल का यह फीचर डॉक्टर के द्वारा लिखी जाने वाली दवाओं की पहचान और उन्हें हाइलाइट करने में मदद करेगा। इसके लिए गूगल लेंस में एआई टूल बनाया जाएगा। गूगल का यह नया टूल खराब लिखे मेडिकल नोट्स को डिकोड कर सकता है। कंपनी ने एआई फॉर इंडिया कार्यक्रम के दौरान इस फीचर का प्रदर्शन भी किया है। कंपनी ने कहा कि इस सिस्टम को वास्तविक दुनिया के लिए तैयार करने से पहले इसमें अभी भी बहुत काम किया जाना बाकी है।

द वॉशिंगटन पोस्ट में कर्मचारियों की छंटनी की तैयारी

वैश्विक स्तर पर बढ़ते मंदी के जोखिम के बीच दुनियाभर की तमाम बड़ी कंपनियों में छंटनी का दौर जारी है। इसी बीच अमेरिका के प्रतिष्ठित अखबार 'द वॉशिंगटन पोस्ट' को लेकर भी छंटनी की बात कही जा रही है। कंपनी के सीईओ और प्रकाशक फ्रेड रियॉन ने इसकी घोषणा भी कर दी कि अगले साल के पहले क्वार्टर में छंटनी की जा सकती है। इसको लेकर उन्होंने टाउन हॉल में अपने कर्मचारियों के साथ एक बैठक आयोजित की। बैठक में उन्होंने 2023 की पहली तिमाही में छंटनी किए जाने की बात कही। इस मीटिंग में जैसे ही कर्मचारियों ने अपने कुछ जरूरी सवाल पूछे तो कंपनी के सीईओ फ्रेड रियॉन इन सवालों से बचते दिखे और मीटिंग छोड़कर वहां से चले गए। सीईओ ने संकेत दिए हैं कि वह करीब 2500 कर्मचारियों को बाहर का रास्ता दिखा सकते हैं।

बता दें कि अमेरिका के मीडिया उद्योग में छंटनी और कटौती चल रही है। इससे पूर्व अमेरिका के नामी समाचार पत्र न्यूयॉर्क टाइम्स के कर्मचारी आठ दिसंबर को हड़ताल पर चले गए थे। 40 साल से भी ज्यादा के समय में यह पहली बार थाए जब न्यूयॉर्क टाइम्स के कर्मचारी हड़ताल पर गए।